Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय-2

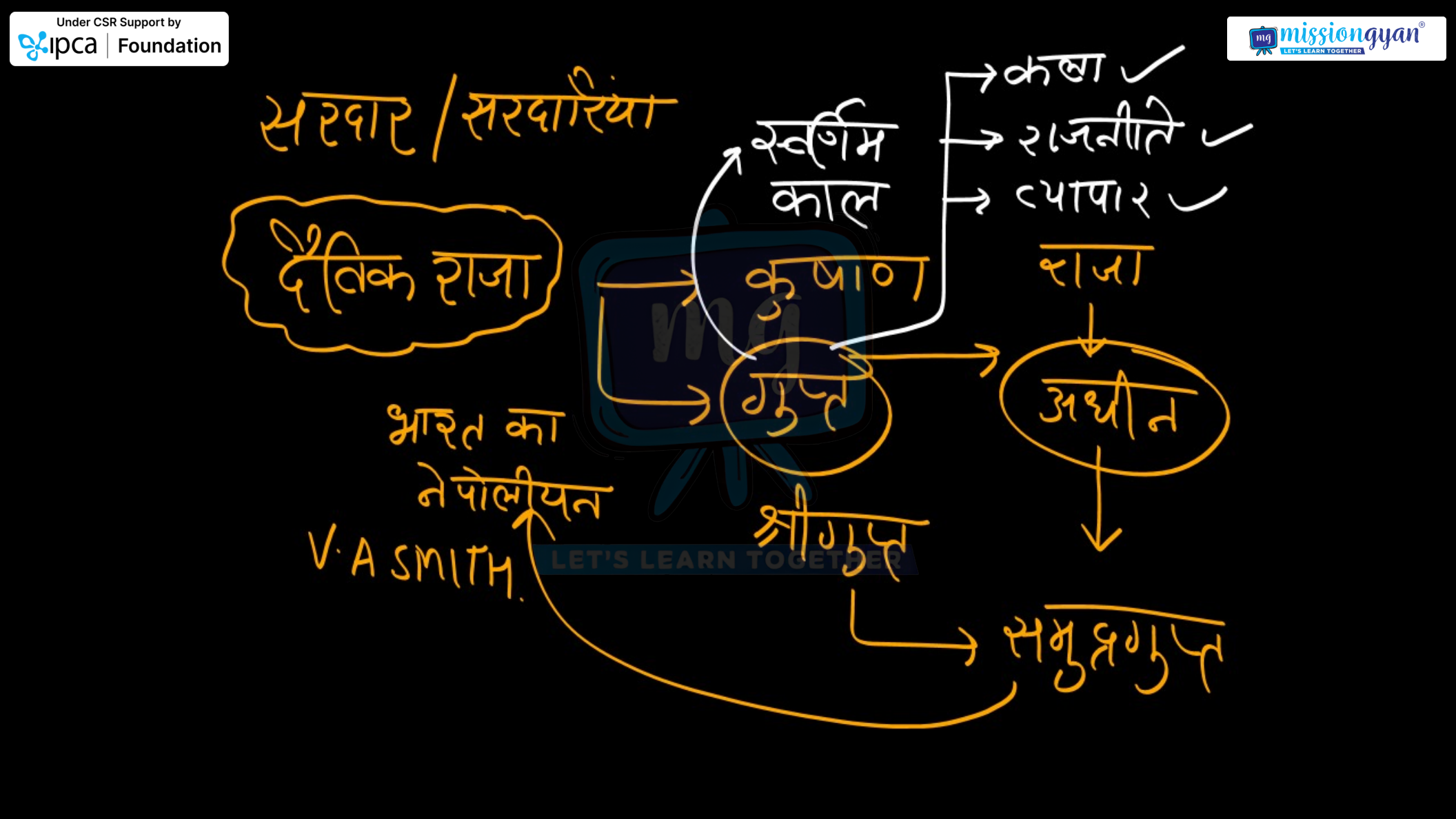
राजा, किसान और नगर
(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग-6

Pritesh Joshi

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चन्द्रगुप्त - I

- गुप्त संवत
- महाराजाधिराज



गुप्त वंश भी इसके संस्थापक श्री गुप्त जो कि एक बड़े सामंत थे, से प्रारम्भ होकर चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त जैसे प्रतापी शासकों तक पहुंचा।

श्री गुप्त (240 – 280 ई.) संस्थापक

घटोत्कच (280 – 319 ई. तक)

चन्द्रगुप्त प्रथम (319 – 350 ई. तक)

समुद्रगुप्त (350 – 375 ई. तक)

भारत का नेपोलियन भी कहते हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त, आदि प्रतापी शासक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



आर्थिक

- चांदी सिक्के
- मद्दशैली - लौंह स्तंभ
- कालिदास, धनवन्तरि वाराहमीर

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375 – 415 ई.) – विक्रमादित्य भी कहा गया। चीनी यात्री फाह्यान (405 – 411) तक इसके दरबार में रहा।

कुमार गुप्त प्रथम (415 – 455 ई.) – यह भी एक प्रतापी शासक था जिसने अश्वमेघ यज्ञ भी करवाया।

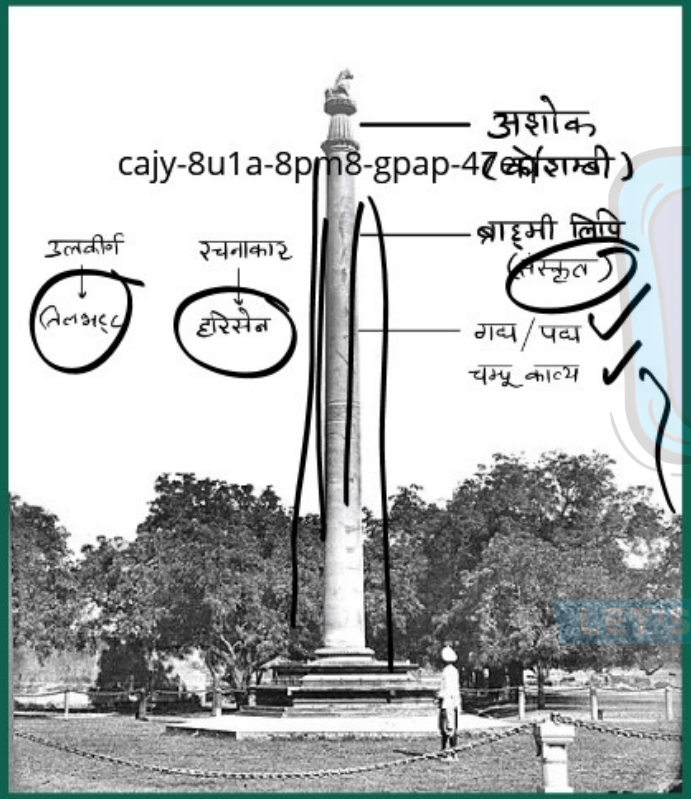
स्कन्दगुप्त (455 – 467 ई.) – गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का अपने गवर्नर चक्रपालित द्वारा पुर्ननिर्माण करवाया।

अंतिम सफल शासक था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रयाग प्रशस्ति + इलाहाबाद स्तंभ अभि॰



- गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों की सहायता से लिखा गया है। साथ ही कवियों द्वारा अपने राज्य या स्वामी की प्रशंसा में लिखी गई प्रशस्तियां भी उपयोगी रही है।
- इतिहासकार इन रचनाओं के आधार पर इतिहास खोजने का प्रयास करते हैं लेकिन ये रचनाऐं तथ्यात्मक विवरण की अपेक्षा काव्यात्मक ग्रंथ ही है। उदाहरण स्वरूप देखें तो इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण ने की जो संभवतः सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि थे, ने संस्कृत में की थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

② गुप्त वंश

- श्रीगुप्त
- घटोत्कच
- समुद्रगुप्त → नेपोलीयन ?
- प्रयाग प्रशस्ति
  - इलाहबाद स्तंभ अभि.
  - ब्राह्मी लिपि
  - संस्कृत
  - हरिसेन
  - गद्य+पद्य → चम्पू काव्य

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





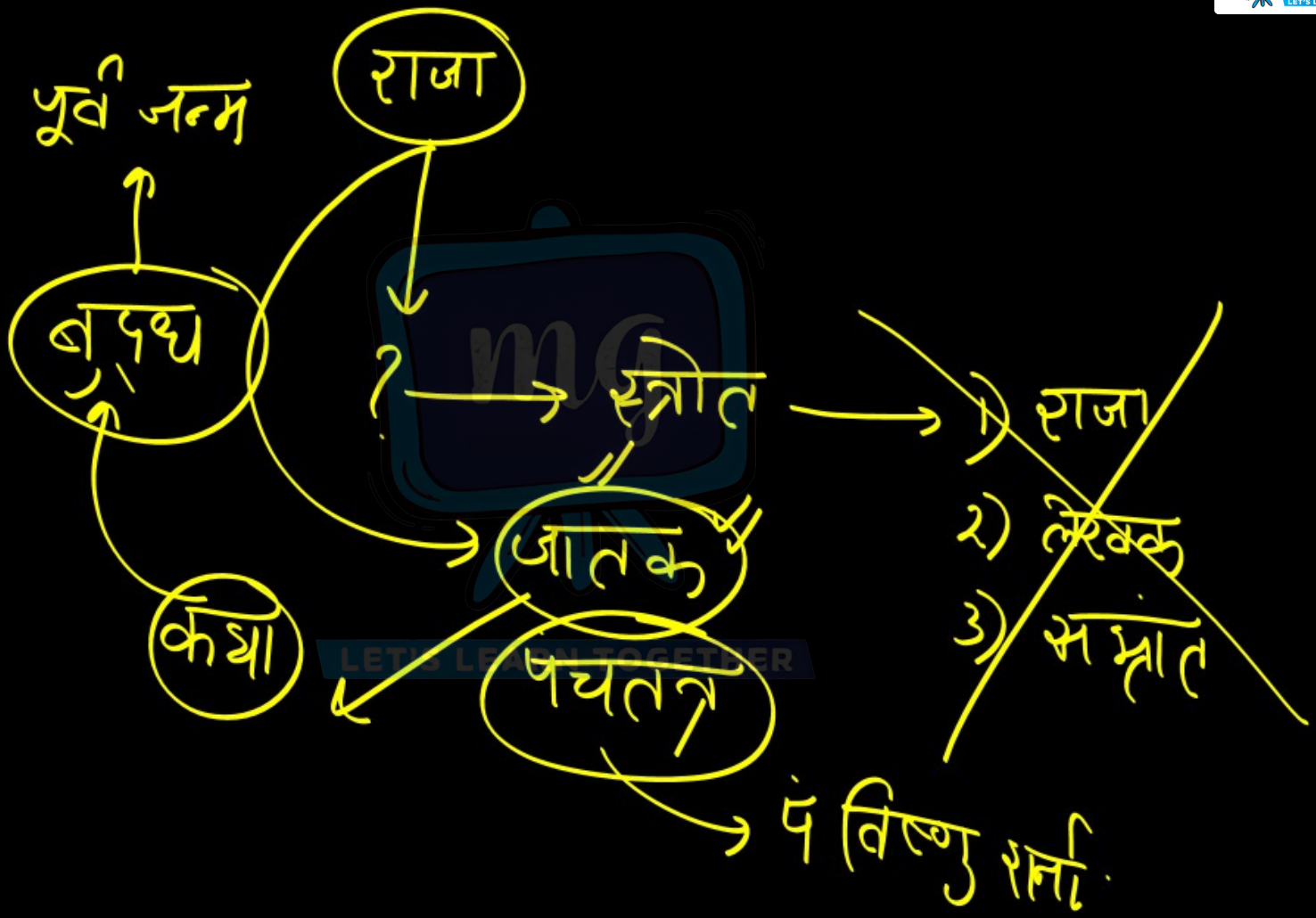
बदलता हुआ देहात

जनता में राजा की छवि :-

- राजाओं के बारे में प्रजा क्या सोचती थी इसका जवाब अभिलेखों द्वारा नहीं मिल सकता।
- साधारण जनता द्वारा राजाओं के बारे में अपने विचार और अनुभव के विवरण कम ही छोड़े गये हैं।
- जातक तथा पंचतंत्र जैसे ग्रंथों में वर्णित कथाओं की समीक्षा करके इतिहासकारों ने इसका निराकरण करने का प्रयास किया है।
- इनमें से अनेक कथाओं के स्त्रोत मौखिक किस्से कहानियां हैं। जिन्हें बाद में लिपिबद्ध किया गया होगा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- जातक कथाएं पहली सहस्त्राब्दि ई. के मध्य में पालि भाषा में लिखी गयी है।

जातक कथाऐं महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाऐं हैं। ये विश्व की प्राचीनतम लिखित कथाऐं हैं। इसमें लगभग 600 कहानियां संग्रह की गयी है। जिनमें मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। ये बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटिक का भाग है।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. शासकों के असली किरदार को हम ऐतिहासिक तौर पर कैसे जान सकते हैं?

Q. जातक कथाएँ?

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- गंदतिन्दु जातक नामक एक कहानी में बताया गया है कि –
- एक कुटिल राजा की प्रजा दुखी रहती है। वृद्ध महिलाऐं, पुरूष, किसान, पशुपालक, ग्रामीण बालक और यहां तक की जानवर भी शामिल हैं। जब राजा वेश बदलकर प्रजा के बीच में उनकी सोच जानने के लिए जाता है तो एक–एक कर सभी अपने दुखों का कारण राजा को ही बताकर बुरा–भला कहते हैं। उन्होंने कहा कि रात में डकैत तथा दिन में राजा के अधिकारी कर के नाम पर उनको लूटते हैं। इससे बचने के लिए ये लोग अपने अपने गांव छोड़कर जंगल में बस गये।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इससे पता चलता है कि राजा और प्रजा विशेषकर ग्रामीण के बीच संबंध तनावपूर्ण रहते थे। क्योंकि शासक अपने राजकोष को भरने के लिए बड़े-बड़े कर मांग करते थे जिससे किसान त्रस्त रहते थे।
- इस बीच करों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों ने उपज बढ़ाने के और उपाय ढूंढने शुरू किये।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. गंदतिन्दु नामक जातक से हम ऐतिहासक तौर पर क्या जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ?



LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



फाल

कर
Tax
फसल



उपज बढ़ाने के तरीके :-

- उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो 600 ई. पू. से ही गंगा तथा कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था।
- जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी वहां लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी।
- गंगा की घाटी के क्षेत्रों में धान की रोपाई की उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालांकि किसानों के इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यद्यपि लोहे के फाल वाले हल से फसलों की उपज बढ़ने लगी थी लेकिन ऐसे हलों का उपयोग कुछ ही हिस्सों में सीमित था। पंजाब और राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग 20वीं सदी से शुरू हुआ।
- उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग खेती के लिए कुदाल का प्रयोग करते थे जो ऐसे इलाकों के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अभि०

- उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुओं, तालाबों और कहीं-कहीं नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था।
- व्यक्तिगत लोगों और कृषक समुदायों ने मिलकर सिंचाई के साधन निर्मित किये।
- व्यक्तिगत तौर पर तालाबों, कुओं और नहरों जैसे सिंचाई के साधनों का निर्माण राजा या प्रभावशाली लोग करवाते थे। जिन्होंने अपने इन कामों का उल्लेख अभिलेखों में भी करवाया था।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यह गुजरात में गिरनार पर्वत पर स्थित है।
- इसका निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने गर्वनर पुण्यगुप्त वैश्य की सहायता से करवाया।
- शक शासक रूद्रदमन ने अपने सौराष्ट्र गर्वनर सुविशाख द्वारा इसका जीर्णोद्धार करवाया था।
- स्कन्दगुप्त ने गर्वनर चक्रपालित द्वारा इसकी मरम्मत करवा कर बांध बनवाया।

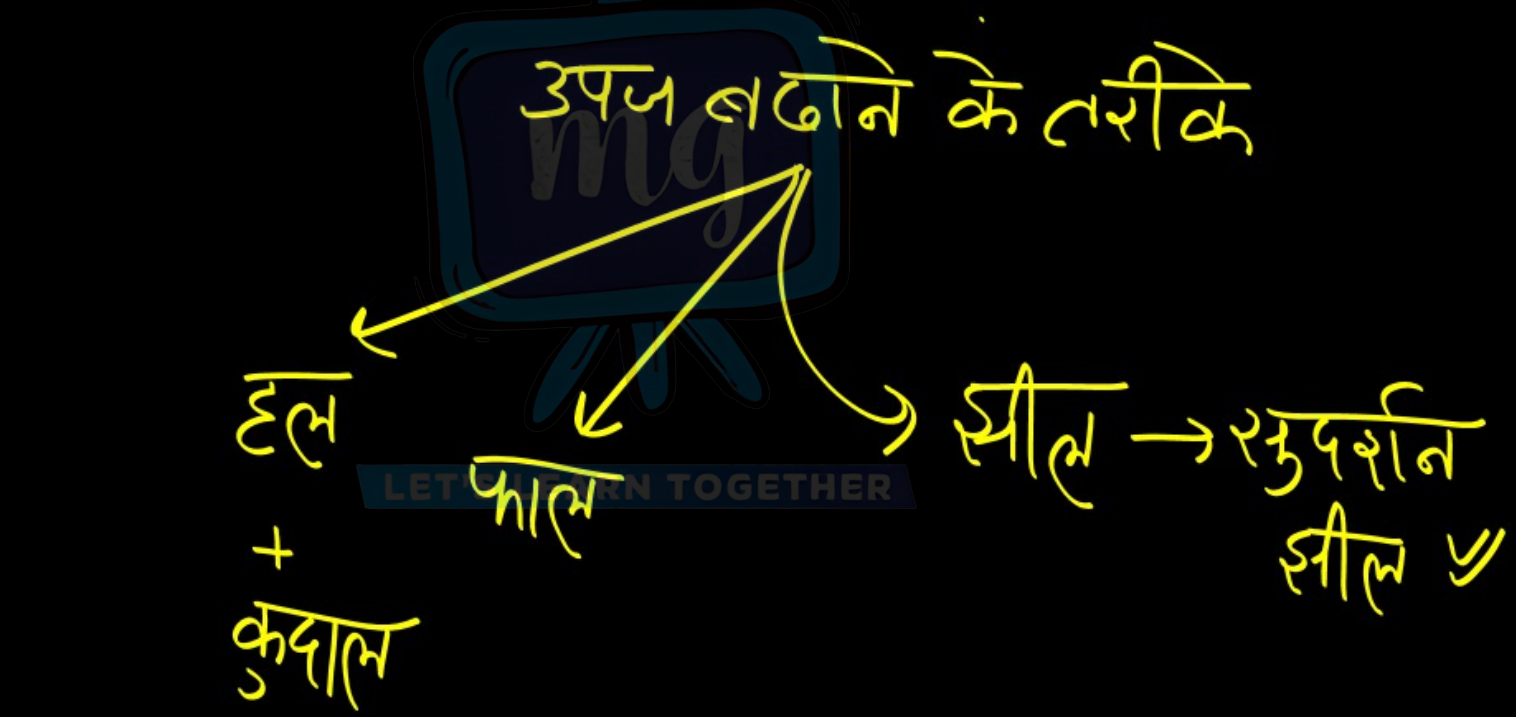
सुदर्शन झील
अभि०

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन काल मे उपज बढाने के तरीको का वर्णन करे?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

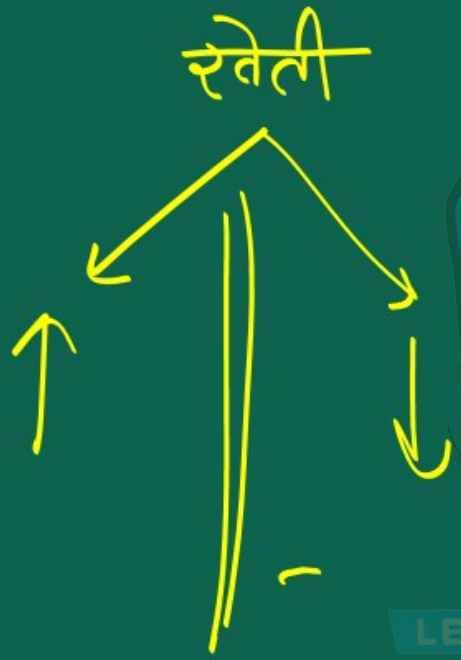
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

२. सुदर्शन सील ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ग्रामीण समाज में विभिन्नताऐं:-

- खेती की नई तकनीकों से यद्यपि उपज तो बढ़ी लेकिन इसके लाभ समान नहीं थे।
- खेती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढ़ता जा रहा था। कहानियों में विशेषकर बौद्ध कथाओं में, बड़े बड़े जमींदारों, छोटे किसानों तथा भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों का उल्लेख मिलता है।
- पालि भाषा में गहपति शब्द का प्रयोग छोटे किसानों तथा जमींदारों के लिए किया जाता था।

LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गहपति

गहपति घर का मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था। घर से जुड़े भूमि, जानवर या अन्य सभी वस्तुओं का वह मालिक होता था। कभी कभी इस शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वाले सभ्रांत व्यक्तियों और व्यापारियों के लिए भी होता था।

LET'S LEARN TOGETHER